चिकित्सा के भेद

1. प्राकृतिक चिकित्सा

निदान परिवर्जन = "संक्षेपतः क्रियायोगो निदानपरिवर्जनम् ।" (सु.उ. 1/25)

जिन कारणों से रोग उत्पन्न हुआ है उनका त्याग करना.

2. द्विविध चिकित्सा -

① शीत चिकित्सा = उष्णता जनित रोगों मे शीत उपचार
उष्ण चिकित्सा =

② संतर्पण (बृंहण) चि. - कृश पुरुष को लघु गुण युक्त पुष्टिकारक आहार देना
अपतर्पण (लंघन) चि. - स्थूल पुरुष को गुरु गुण युक्त लेखन आहार

③ शोधन (Biopurification) = बलवान तथा बहुदोष वाले रोगी मे
शमन (Palliative therapy) = बलहीन तथा क्षीण दोष वाले रोगी मे

④ ऊर्जस्कर = स्वस्थ पुरुष मे बल, वीर्य व ओज की पुष्टि व जरा व्याधि नाश.
रोगघ्न = विशिष्ट व्याधी को दूर करने वाली चि..

⑤ प्रत्यभूत चि.- औषधी से चि..
अप्रत्यभूत चि.- मंत्र, बलि, ~~वर्ण~~ होम, जप आदि द्वारा

⑥ रसायन - आयु, बल, वर्ण, बुद्धि व रोग शमनार्थ
वाजीकरण = पौरुष शक्ति, प्रहर्ष, शुक्र संवर्धन एवं संतानोत्पत्ति हेतु

⑦ रोग प्रशमन = संशमन
अपुनर्भव = संशोधन

③ त्रिविध चि.:

① दैवव्यपाश्रय : मंत्र, तप, जप, मणिधारण, मंगलपाठ स्तुति, औषधधारण
2 युक्तिव्यपाश्रय : दोष, प्रकृति, देश, काल, आदि के बारे मे विचार के बाद
सत्वावजय चि. - अहितकर विषयों से मन को हटाकर

② अंतः परिमार्जन - औषध, पथ्य आदि का अन्तः प्रयोग
बहिःपरिमार्जन - बाह्य प्रयोग (अभ्यंग, स्वेद, लेप)
शस्त्रप्रणिधान - छेदन, भेदन आदि क्रियाऐं (surgery)

③ आसुरी = शस्त्र प्रयोग
दैवी = रस - रसायन प्रयोग
मानुषी = कषाय, चूर्ण, वटी आदि का प्रयोग.

काय चिकित्सा

काय: निरुक्ति:

① "चीयतेऽन्नादिभिरिति काय:" = अन्न आदि से जिसका पोषण हो।

काय शब्द की निष्पत्ति "चिञ्-चयने" धातु मे 'घञ्' प्रत्यय लगाने से होती है जिसका अर्थ है 'देह'।

② 'काय' का एक अर्थ "शरीर" भी होता है = "प्रगाति शीर्यते वा - शरीरम्"
अनेक बाह्य एवं आभ्यंतर क्रियाओं एवं काल के स्वभाव से जिसका प्रतिक्षण नाश होता रहे।

③ 'कायाति शब्दायते इति काय:' निरुक्ति से काय का एक अर्थ मन है।

④ काय का एक अर्थ जठराग्नि भी है।

in Correlation with modern Concept

काय = चीयतेऽन्नादिभिरिति काय: = Anabolism.
शरीर = शीर्यते इति शरीरम् = Ketabolism.
देह = दिह- उपचये- वर्धने = Metabolism.

काय शब्द के पर्याय =
- कलेवर, गात्र, वपु, शरीर, वर्ष्म, विग्रह, काय, देह, मूर्ति, तनु

- काय के विभिन्न भेद =

① मन (सत्व) के अनुसार = 16 < सात्विक = 7, राजस = 6, तामस = 3.

② सार के अनुसार = 08 (त्वक्सार + 6 धातुएं + सत्वसार).

③ प्रकृति के अनुसार = 03 = (V, P, K).

चिकित्सा

व्युत्पत्ति -

- "चीकित्सा रुक प्रतीक्रिया" (अमरकोश) - रोग का प्रतिकार करना।
- चीकित्सा शब्द "कित रोगापनयने" धातु मे "सन्" प्रत्यय लगाने से सिद्ध हुआ है।

निरुक्ति -

- "या क्रिया व्याधि हरणी सा चिकित्सा निगद्यते ।" (भा०प्र०)
- "चीकित्सा रोग निदान प्रतिकारे" (वैद्यक शब्द सिंधु)
- "कैतिनुत् इच्छति इति चिकित्सति, चिकित्सति इति चिकित्सा ।"
- "चीकित्सा तत प्रतीकार:।"

परिभाषा -

- चतुर्णां भिषगादीनां शस्तानां धातुवैकृते ।
  प्रवृत्ति धातुसाम्यार्था चीकित्सेत्यभिधीयते ॥ (च०सू० 9/5)
- या क्रिया व्याधिहरणी सा चिकित्सा निगद्यते (भा०प्र०)
- याभि क्रियाभिर्जायन्ते शरीरे धातव: समा: ।
  सा चीकित्सा विकाराणां कर्म तद् भिषजां स्मृतम् ॥ (च०सू० 16/34)
- in modern science. Treatment is a manner of applying remedies or it is the care and management of a patient to combat disease/diseases.

पर्याय -

चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम् ।
प्रायश्चितम् प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम् ॥ (च०चि० 1/3).

- चिकित्सा - (शब्द) -
- व्युत्पत्ति - ① "चिकित्सा रुक प्रतिक्रिया" - रोग के प्रतिकार को चि. कहते है। (अमरकोश)
② "कित रोगापनयने" धातु मे "सन्" प्रत्यय लगाने से सिद्ध हुआ है। जिसका अर्थ होता है रोग को दूर करना।

- निरुक्ति -
- "या क्रिया व्याधीहरणी सा चिकित्सा निगद्यते ॥". (भाप्र).
- "चिकित्सा रोगनिदान प्रतिकारे" (वैद्यक शब्द सिंधु).
- "चिकित्सा रुक प्रतिक्रिया: रुजः प्रतिक्रिया निरसनम् ॥". (अमरकोश)
- 'चिकित्सा तत प्रतिकार:' (राज. नि.).

- परिभाषा -
- या क्रिया व्याधिहरणी सा चिकित्सा निगद्यते (भाप्र).
- चिकित्सा रोगनिदान प्रतिकारे। (वैद्यक शब्द सिंधु).
- चीकित्सा तत् प्रतिकार:। (रा.नि.)
- चतुर्णां भिषगादीनां शस्तानां धातु वैकृते।
प्रवृति धातुसाम्यार्था चिकित्सेत्याभिधीयते ॥ (च.सू. 9/5)
- याभि क्रियाभि जायन्ते शरीरे धातव: समा:।
सा चीकित्सा विकाराणां कर्म तद भिषजां स्मृतम् ॥ (च.सू. 16/34)
- रोगस्तु दोषवैषम्यं दोषसाम्यमरोगता। (अ.हृ.सू. 1/20)

in Modern science -
Treatment is a manner of applying ~~medicine~~ Remedies OR it is the care and mananagement of a patient to combat disease/ diseases.

पर्याय - "चीकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम्।
प्रायश्चितिमं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम् ॥. (च.चि. 1/3).

भेद - ① निदान परिवर्जन (एक भेद).
② दो भेद - 7
③ तीन भेद - 7.
④ चतुर्विध चि. - 3.
⑤ पंचविध = पंचकर्म
⑥ षड्विध = षडूपक्रम.
⑦ सप्तविध
⑧ अष्टविध in शल्य
⑨ दशविध - 04 संख्या + ...
⑩ त्रयोदश - by वा. (8+5)
⑪ अष्टादश by चक्रपाणि
⑫ षष्टि उपक्रम - by सु.. (अपतर्पण to रक्षा विधान).